Sanskrit (Honours)
B.A. (Ist Part)

Date- 14.8.2020
डॉ० लक्ष्मी [illegible]
अतिथि विद्वान
[illegible]
[illegible]
[illegible]

मेघदूतम् (प्रबन्धकाव्य)

महाकवि मानव एवं प्रकृति के उद्दाम रूप-लावण्य एवं सौन्दर्य के अनन्य उपासक तो हैं ही, साथ ही वे मानव एवं प्रकृति के जीवन के अत्यन्त सूक्ष्म पक्षों को भी उद्घाटित करने में पीछे नहीं रहते हैं, जिन्हें बहुत कम ही कवि छूना चाहते हैं। निस्सन्देह महाकवि भवभूति करुण रस के वर्णन महाकवि कालिदास के समकक्ष लगते हैं, कहीं-कहीं तो उनसे आगे भी निकल जाते हैं; परन्तु महाकवि भवभूति का करुण रस वर्णन अपनी सीमाएँ पार कर जाता है एवं अस्वाभाविक कृत्रिम लगने लगता है, फलतः सुधी पाठकगण को वह बोझिल लगने लगता है। परन्तु महाकवि कालिदास का करुण रस अस्वाभाविक विप्रलम्भ शृंगार का ही विस्तार है, जिसके वर्णन में महाकवि कालिदास अत्यन्त प्रवीण हैं। उनके रचित श्लोकों एवं प्रसंगों में जब पाठक का हृदय प्रवेश कर लेता है तो वह उसमें से चाहकर भी बाहर नहीं निकल पाता अपितु अधिक रसास्वादन की प्रतीक्षा करने लगता है।

उदाहरण तो मेघदूत में प्रत्यक्ष ही मिल जाता है जहाँ पिछले श्लोक में महाकवि निर्विन्ध्या नदी के माध्यम से नायिका के उद्दाम कामभावी काया का वर्णन करते हैं, तथा उसके कौवर्य को

नायिका द्वारा अपना नायिप्रदर्शन मानते हैं, जिससे रसिक पाठकगण रोमांचित होने लगता है। फिर कुछ विपुलभग्न शृंगार का वर्णन कर रसिकजनों की बढ़ती आकांक्षाओं पर लगाम लगा देते हैं, जिससे वह फिर धरातल पर आ जाता है। अगले श्लोक में ही महाकवि ने निर्विन्ध्या नदी को विरहिणी नायिका के रूप चित्रित किया है। इनके महाकवि कालिदास ने उसकी वेदना की व्याकुलता का सफलतापूर्वक चित्रण किया है। ग्रीष्म ऋतु के वर्षा के अभाव में निर्विन्ध्या नदी की धारा विरहिणी नायिका की तरह केश की वेणी की तरह पतली हो गई है एवं तटवर्ती पेड़ों के पीले पत्ते उड़कर उसपर आ गिरे हैं जिससे उसकी हरी की हरी कांति ही पीली पड़ गई है। इस प्रकार निर्विन्ध्या (सिन्धु) नदी किसी विरह में पीली पड़ी किसी कृशांगी नायिका की तरह जान पड़ती है। यह तो उसके प्रियतम स्वरूप कैश्य का सौभाग्य है कि कोई नायिका उसके लिए इस तरह घुल-घुलकर क्षीण हो रही है। अतः कैश्य का यह परम धर्म बन जाता है कि वह वृष्टिपात रूप प्रेमरस के स्यन्दन से उस कृशांगी की कृशता दूर करे -

कर्णीभूतगतोत्पलेव सावतीतस्य सिन्धुः
पाण्डुच्छाया तटरुहतरुभ्रंशिभिर्जीर्णपर्णैः।
सौभाग्यं ते सुभग विरहावस्थया व्यञ्जयन्ती
कार्श्यं येन त्यजति विधिना स त्वयैवोपपाद्यः

Rupam Pandey
11/8/2020